प्रभा खेतान के स्त्री विमर्श संबंधी चिंतन और रचनात्मक लेखन का आलोचनात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा के अन्तर्गत पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध की

रूपरेखा

सन् 2019

शोध निर्देशक | **शोधार्थी**

डॉ. दयाल प्यारी सिन्हा | **प्रिया सिंह**
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय
डी.ई.आई.

विभागाध्यक्ष | **कला संकाय प्रमुख**
प्रो.शर्मिला सक्सेना | **प्रो. जे. के. वर्मा**
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
डी.ई.आई.

हिन्दी विभाग, कला संकाय,
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005

प्रभा खेतान के स्त्री विमर्श संबंधी चिंतन और रचनात्मक लेखन का आलोचनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना–

साहित्य सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिंब है। प्रत्येक देश–काल के परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता जाता है। साहित्य सृजन सदैव जनसमुदाय की भावनाओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। समाज के हर वर्ग, हर तबके के लोगों को साहित्य ने अपना विषय बनाया है। साहित्य सृजन की प्रक्रिया अत्यंत प्राचीन है। हमारे विद्वतजन ने अपने ज्ञान अनुभव के द्वारा उत्कृष्ट साहित्य का सृजन करके जन सामान्य का उनके आस–पास घटित हो रही घटनाओं से साक्षात्कार कराया है। बदलते समय के साथ–साथ साहित्य में विभिन्न विधाओं–कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि का प्रादुर्भाव हुआ। विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन एवं इनके विषय क्षे्त्र का दायरा बढ़ता गया और इसके साथ ही नई वैचारिकी का प्रादुर्भाव हुआ। इसी बदलते परिदृश्य और परिवेश के साथ–साथ साहित्य में एक दौर ऐसा भी आया, जो विमर्शों के नाम से जाना गया। समाज का प्रत्येक वर्ग, जो पीड़ित और शोषित है, उसे हाशिये से केन्द्र में लाने का कार्य विमर्शों का है। मूल रूप में विमर्शों की अवधारणा भारतीय न होकर पाश्चात्य दृष्टिकोणसे प्रभावित है। पश्चिमी यूरोप तथा अमेरिका में 19वीं सदी में विभिन्न विमर्शों ने जन्म लिया। भारत तक विमर्शों की अवधारणा को पहुँचने तथा विकसित होने में ढाई दशक लग गए। हमारे यहाँ विमर्शों की चर्चा बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से शुरु हुई और अविरल रूप से अभी तक चली आ रही है। हिन्दी साहित्य में विमर्शों का उद्भव दलित विमर्श के रूप में हुआ तत्पश्चात् आदिवासी विमर्श, किसान विमर्श, स्त्री विमर्श जैसे अनेक विमर्शों का आविर्भाव हुआ। स्त्री विमर्श एक ऐसा विमर्श है, जो स्त्री के अधिकारों की वकालत करता है।स्त्री विमर्शसदियों से होते आ रहे उसके शोषण को जड़ से समाप्त करने का पक्षधर है एवं स्त्रियों की स्वतंत्रता और समानता की बात करता है। स्त्री मुक्ति के विभिन्न पहलुओं की पड़ताल करना इसका प्रमुख लक्ष्य होता है।

स्त्री विमर्श की अवधारणा पश्चिम की देन है। सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी के अंतिम दशक में फ्रांस में स्त्री विमर्श की सशक्त आवाज़ सुनाई पड़ती है। स्त्री अधिकारों की बात करने वाले दो पुरुषों विलियम टाम्पसन एवं स्टुअर्ट मिल ने स्त्री मुक्ति के पहलुओं पर प्रकाश डाला। बीसवीं सदी की फ्रांस की लेखिका सीमोन द बोउवार ने 'दि सेकेण्ड सेक्स' नामक पुस्तक लिखकर समाज की उन विषमताओं की ओर ध्यान आकर्षित किया, जिनके कारण स्त्री हाशिये पर है। भारत में स्त्री विमर्श के इतिहास का अवलोकन करें तो नवजागरण काल में राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासाागर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, केशवचन्द्र सेन, ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, पंडिता रमाबाई,स्वामी विवेकानन्द आदि के स्त्री अधिकारों के संदर्भ में किए गए संघर्ष के रूप में स्त्री–विमर्श का एक लंबा इतिहास रहा है।

भारत में स्त्री–विमर्श का रचनात्मक इतिहास विस्तृत एवं प्राचीन है। बौद्धकालीन थेरीगाथा स्त्री विमर्श के इतिहास की पुस्तकों में अग्रगण्य है। थेरीगाथा महिला लेखन का ऐसा दुर्लभ संग्रह है, जिसमें बौद्ध भिक्षुणियों की विस्तृत जीवन गाथा संकलित है। संत साहित्य में सहजोबाई और दयाबाई के योगदान को आदर के साथ स्वीकार कर सकते हैं। महाकवि सूरदास ने 'भ्रमरगीत' में गोपियों के माध्यम से नारी चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान की है, जो सदियों से चली आ रही परंपराओं का परित्याग करके मुखरता के साथ अपने पक्ष को रखती हैं। मध्यकाल में स्त्री अधिकारों को लेकर बहस करने वाली कवयित्री मीराबाई ने सामन्तवादी एवं पुरुषसत्तात्मक समाज को चुनौती दी। आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चन्द्र द्वारा स्त्री शिक्षा के लिए 'बालाबोधिनी' नामक पत्रिका का सफल संपादन किया गया। राजेंद्र बाला घोष पहली स्त्री थीं, जिन्होंने स्त्री अधिकारों के लिए आवाज उठाई। द्विवेदी युग के कवियों में मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य में उपेक्षित नारी पात्रों–उर्मिला, यशोधरा, कैकेयी आदिको विशिष्ट स्थान दिया। छायावादी कवियों ने नारी के प्रति उदात्त दृष्टिकोण अपनाकर समाज में उन्हें सम्मानित स्थान प्रदान किया। प्रसाद, निराला एवं पंत तीनों ही छायावादी कवियों ने नारी चेतना को अभिव्यक्ति दी। महादेवी वर्मा ने 'शृंखला की कड़ियाँ' में अलग–अलग सांस्कृतिक संदर्भों में स्त्री की स्थिति के विश्लेषण एवं उसके उत्थान में अपना अमूल्य योगदान दिया। महादेवी वर्मा के शब्दों में, ''हमें ना किसी पर जय

चाहिए ना किसी से पराजय, ना किसी पर प्रभुता चाहिए ना किसी का प्रभुत्व, केवल अपना वह स्थान, वह स्वत्व चाहिए जिनका पुरुष के निकट कोई उपयोग नहीं परंतु जिसके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेंगी।"

स्वातंत्र्योत्तर काल में उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, शशिप्रभा शास्त्री, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, नासिरा शर्मा आदि स्त्री विमर्श से जुड़ी प्रमुख लेखिकाएँ हैं। इन लेखिकाओं में प्रभा खेतान विशिष्ट स्थान रखती हैं। बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी साहित्य की महिला लेखिकाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली प्रभा खेतान का जन्म कोलकाता के संपन्न मारवाड़ी परिवार में हुआ था। वे अपने पिता की पाँचवी संतान थीं। इनकी शिक्षा कोलकाता में हुई। इन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि लेने के पश्चात्ज्यां पॉल सार्त्र के अस्तित्ववाद विषय पर विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। प्रभा खेतान पर अस्तित्ववाद का पर्याप्त प्रभाव दिखाई पड़ता हैं। साहित्यकार की रचनाधर्मिता की पृष्ठभूमि उसके व्यक्तित्व में समाहित रहती है। प्रभा खेतान ने जितना संघर्ष अपने जीवन में किया, वह अन्य स्त्रियों में शक्ति का संचार करने के लिए औषधि का कार्य करता है। प्रभा खेतान का समग्र साहित्य उनके अनुभवों की देन है। उनके द्वारा रचित साहित्य का उनके जीवन से घनिष्ठ संबंध है। प्रभा खेतान ने पारंपरिक विधाओं के साथ ही चिंतन, साहित्य, अनुवाद एवं आत्मकथा आदि विधाओं में मौलिक लेखन करके अपने बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचय दिया। इनके साहित्य का मुख्य विषय स्त्री विमर्श है। उनका पहला काव्य संग्रह 'अपरिचित उजाले' है। इस काव्य संग्रह में 64 कविताएँ हैं, जिनका मूल स्वर प्रेम है। प्रभा खेतान ने इन कविताओं के माध्यम से एक ओर प्रेम की सफलता का उल्लास और दूसरी ओर असफलता की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। प्रभा खेतान ने 'सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं' काव्य संग्रह में नारी की पीड़ा, निराशा, नारी अस्तित्व की समस्या, श्रम, नारी के आक्रोश, शोषित नारी के प्रति संवेदना आदि की अभिव्यक्ति की है। 'एक और आकाश की खोज में' काव्य संग्रह में पुरुष दासता की शिकार नारी की व्यथा का वर्णन किया गया है। प्रभा खेतान द्वारा रचित 'कृष्णधर्मा मैं' एक लम्बी कविता है। इस कविता में उन्होंने कृष्ण के मिथक को ग्रहण करते हुए मनुष्य जीवन को महाभारत के समान

माना है। प्रभा खेतान कृत'अहल्या' एक लंबी कविता है। इसमें गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या को आधार बनाया गया है कि वह किस प्रकार पति के श्राप से ग्रसित होकर पत्थर की शिला बन जाती है और अपने मुक्तिदाता की प्रतीक्षा करती है। आज भी स्त्री अहिल्या की भाँति पत्थर के समान खामोश रहकर सब कुछ सहन करती है और अपनी मुक्ति के लिए पुरुष की ओर आशा भरी दृष्टि से देखती है। इस कविता के आधार पर प्रभा खेतान स्त्री विमर्श की प्रमुख रचनाकार के रूप में सामने आती हैं।

प्रभा खेतान एक सफल कवयित्री होने के साथ ही एक सिद्धहस्त गद्यकार भी हैं। जब उन्हें महसूस हुआ कि वे काव्य के माध्यम से अपनी बात पूर्णरूपेण समाज के सामने नहीं रख पा रहीं हैं तो उन्होंने गद्य को माध्यम बनाया और उपन्यास लेखन की ओर प्रवृत्त हुई। प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी को विविध रूपों में चित्रित किया है। प्रभा खेतान ने आठ उपन्यासों की रचना की है। इन उपन्यासों में वैश्विक स्तर पर नारी की स्थिति को दर्शाया गया है। 'आओ पेपे घर चलें' प्रभा खेतान का प्रथम उपन्यास है, जो विदेशी पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। प्रभा खेतान ने अमेरिका प्रवास के दौरान जो कुछ देखा, अनुभव किया, उसे कथानक बनाकर इस उपन्यास में प्रस्तुत किया। इस उपन्यास में कई समस्याओं को उभारा गया है। इस उपन्यास में वैश्विक स्तर पर जीवन–संघर्ष, नक्सलवाद, व्यवसायीकरण, पति–पत्नी में आपसी टकराव, भोगवादी मानसिकता, आर्थिक समृद्धि के बीच सम्बन्धहीनता की पीड़ाआदि का चित्रणकिया गया है। प्रभा खेतान का दूसरा उपन्यास 'तालाबंदी' व्यापारिक जीवन से संबंधित है। बंगाल में आए दिन कारखानों का अचानक बंद हो जाना उद्योगपति, निर्यातकों और मजदूरों की परेशानी का कारण बन जाता है। व्यापार जगत की प्रत्येक समस्या और सरकार की आर्थिक नीति का सफल चित्रण 'तालाबंदी' उपन्यास में किया गया है। 'अग्निसंभवा' उपन्यास में प्रभा खेतान ने दो विषयों पर प्रकाश डाला है। इसमें एक ओर चीन की राजनीतिक उठापटक का चित्रण है तथा दूसरी ओर चीन के एक मामूली किसान परिवार की बेटी द्वारा संघर्ष करते हुए हांगकांग की कंपनी में उच्च पद पर आसीन होने की कथा है। प्रभा खेतान अपने व्यापार के सिलसिले में जर्मनी और पेरिस की यात्रा पर गई तथा अपने अनुभवों को 'एड्स' उपन्यास का कथानक बनाया। युद्ध के

कारण व्यापार जगत में आई समस्या, एड्स जैसी बीमारी का बढ़ता शिकंजा, बीमारी के कारण पति–पत्नी के बीच बढ़ती दूरियाँ, पारिवारिक विघटन की समस्या, नारी द्वारा व्यापार करते समय सामना करने वाली समस्याओं को प्रभा खेतान ने इस उपन्यास में बखूबी चित्रित किया है। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में प्रभा खेतान ने अपनी स्वयं की कहानी को विषय बनाया है। इसमें मारवाड़ी परिवार की बहू द्वारा पारिवारिक यातना के विरोध में किए जाने वाले विद्रोह को अभिव्यक्त किया गया है। मारवाड़ी समाज में नारी की स्थिति को इस उपन्यास के केंद्र में रखा गया है। 'अपने अपने चेहरे' उपन्यास 'छिन्नमस्ता' उपन्यास के आगे की कड़ी है। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में प्रभा खेतान के जीवन की आरंभिक कथा है तो'अपने अपने चेहरे' उपन्यास में उनके जीवन की उत्तर कथा चित्रित है। यह उपन्यास संपन्न मारवाड़ी उद्योगपतियों के आंतरिक जीवन का यथार्थ चित्रण करता है। प्रभा खेतान ने इस उपन्यास में यह अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है कि विवाह, पति और बच्चों से परे भी स्त्री का अपना एक अलग अस्तित्व है। 'पीली आँधी' उपन्यास में मारवाड़ी समाज की तीन पीढ़ियों की स्त्रियों के संघर्ष और पीड़ा का सफल चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में मारवाड़ी समाज का प्रतिबिंब झलकता है। 'स्त्री पक्ष' प्रभा खेतान का अंतिम उपन्यास है। इस उपन्यास में नारी जीवन की स्थिति और त्रासदी का चित्रण किया गया है। इन उपन्यासों में प्रभा खेतान ने अर्थ को महत्व देने वाली नारी, अभावग्रस्त नारी, महत्वाकांक्षी नारी आदि कई रूपों में नारी का चित्रण किया है। विदेशी नारी आर्थिक रूप से सक्षम होने के बावजूद अकेली जीवन जीने के लिए विवश है। उसका कोई अपना नहीं होता, वह एक गहरे अवसाद में डूबी रहती है। प्रभा खेतान ने विदेशी नारी की संवेदना और कड़वे सच को स्वयं देखा और अपने उपन्यासों के माध्यम से चित्रित किया। प्रभा खेतान ने अपने साहित्य में भारतीय नारी का पूरा खाका खींचा है और परंपरागत नारी, सहनशील नारी, उपेक्षित नारी, घरेलू नारी, विद्रोही नारी, शिक्षित नारी, नौकरीपेशा नारी आदि अनेक रूपों का उल्लेख किया है। प्रभा खेतान के उपन्यासों के अधिकतर स्त्री पात्र शिक्षित हैं। ये स्त्री पात्र अपनी शिक्षा के बल पर समाज की उपेक्षा तथा प्रताड़ना को पीछे धकेलते हुए आर्थिक रूप से स्वतंत्र होते हैं। ये स्त्री पात्र विद्रोही बनकर अपना अलग मार्ग बनाते हैं तथा पूरे आत्मसम्मान के साथ जीवन जीतें हैं।

प्रभा खेतान ने अधिक कहानियाँ नहीं लिखी हैं। उनकी कहानियों में स्त्री विमर्श ज्यादा मुखरित नही हुआ है लेकिन उनके चिंतन की झलक उनकी कहानियों में परिलक्षित होती है। प्रभा खेतान ने चार कहानियों की रचना की है–'प्रतिद्वंद्वी','मैं अब नहीं लौटूंगा', 'आम का मौसम' और 'मिस मारिया'।

एक चिंतक के रूप में प्रभा खेतान की पुस्तक 'उपनिवेश में स्त्री : मुक्ति–कामना की दस वार्ताएँ' का महत्वपूर्ण स्थान है। इस पुस्तक में नारीवाद के प्रति निर्मित दुराग्रहों और भ्रम का विस्तृत और स्पष्ट तरीके से खंडन किया गया है। प्रभा खेतान ने इस पुस्तक में संकलित लेखों में स्त्री जीवन की विभिन्न समस्याओं को उठाया है और सामाजिक व्यवस्था की जाँच–पड़ताल की है। 'उपनिवेश में स्त्री : मुक्ति–कामना की दस वार्ताएँ' में आधी दुनिया का श्रम और भूमंडलीकरण, स्त्री–लेखन की जगह और आलोचना के भीष्म पितामह, बौद्धिक सरोकार, राष्ट्रवाद और नारीवाद की जमीन, संस्कृतिवाद के छल–कपट और स्त्री के मानस, नारीवादी ज्ञान–मीमांसा के उद्देश्य, स्त्री का सारतत्व, यौनिकता की राजनीति, सामाजिक सरोकार उर्फ़ आक्रामकता की खोज, क्रांति–चेतना के नारी रूप, भाषा और विमर्श का संजाल आदि विषयों को उठाया गया है। प्रभा खेतान आज केभूमंडलीकरण के दौर में स्त्री का सच सामने लाती हैं। 'बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ भूमंडलीकरण और स्त्री के प्रश्न' तथा 'भूमंडलीकरण : ब्रांड, संस्कृति और राष्ट्र' नामक पुस्तकों में प्रभा खेतान ने भूमंडलीकरण के प्रश्नों की गहरी पड़ताल की है। भूमंडलीकरण और उसके आर्थिक पहलू ने स्त्री जीवन को कैसे प्रभावित किया, इस प्रश्न पर प्रभा खेतान पूरी संलग्नता से विचार करती हैं। इस पुस्तक में प्रभा खेतान ने उन सभी तत्वों को उभारने का प्रयास किया है, जो भूमंडलीकरण के प्रभावस्वरूप मानवीय मूल्यों का हनन करने में लगे हैं। भूमंडलीकरण के चक्रव्यूह में केवल स्त्री ही नहीं, पुरुष वर्ग भी उपभोक्ता बनते–बनते उपभोग की वस्तु बनते जा रहे हैं।

प्रभा खेतान के चिंतन और रचनात्मक लेखन में मौलिकता दिखाई देती है। प्रभा खेतान ने जो देखा और अनुभव किया, उसी को अपने चिंतन और रचनात्मक लेखन का आधार बनाया।

प्रभा खेतान ने लेखन व व्यवसाय दोनों क्षेत्रों में अपनी स्वयं की पहचान बनाई। प्रभा खेतान एक ओर अपने साहित्य में जीवन की विभिन्न समस्याओं को उठाती हैं, वहीं दूसरी ओर इन समस्याओं से स्त्री का सामना कराने वाली सामाजिक व्यवस्था के बीच स्वतंत्रता व समानता के अधिकार के लिए संघर्षरत विविध चरित्रों को गढ़ती हैं। ये स्त्री पात्र जहाँ एक ओर पितृसत्तात्मक व्यवस्था की सड़ी–गली मान्यताओं को मानने से इंकार करती हैं, वहीं दूसरी ओर अपने लिए अलग राह बनाने का प्रयास करती हैं।

जब भी कोई लेखक आत्मकथा लिखता है तो अपने जीवन के रहस्यों को परत–दर–परत खोलता चला जाता है, जिसके बारे में पाठकों को कुछ भी पता नहीं होता है। प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' बेहद बेबाकी से लिखी गई है। प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथा में डॉक्टर सर्राफ के साथ अपने संबंध को स्वीकारा है। इन्होंने अपनी आत्मकथा में बचपन में पिता की मृत्यु के बाद भाई द्वारा इनके साथ किए गए दुष्कृत्य का भी वर्णन किया है, साथ ही इसमें तत्कालीन राजनीति, सामाजिक व्यवस्था एवं आर्थिक परिदृश्य की झलक भी दिखाई पड़ती है। प्रभा खेतान ने स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम के दौरान पहली विदेश यात्रा, लेखन कार्य, चमड़े का व्यवसाय शुरू करने, इसमें आने वाली समस्याओं और विदेश यात्रा से प्राप्त हुए अनुभवों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है। संक्षेप में यह आत्मकथा एक साहसिक गाथा है तथा नारी संघर्ष का प्रामाणिक दस्तावेज है।

प्रभा खेतान ने सीमोन द बोउवार की 'द सेकेण्ड सेक्स' नामक पुस्तक का 'स्त्री उपेक्षिता' नाम से हिंदी में अनुवाद किया तथा एक सफल अनुवादक के रूप में प्रसिद्धि पाई। प्रभा खेतान ने 'सांकलों में कैद क्षितिज' में दक्षिण अफ्रीकी कविताओं का अनुवाद किया।

प्रभा खेतान ने राजेन्द्र यादव एवं अभय कुमार दुबे के साथ संयुक्त रूप से स्त्री विमर्श को लेकर लिखे गए लेखों के संग्रह 'पितृसता के नए रूप' का सम्पादन किया, साथ ही 'हंस' पत्रिका के मार्च 2001 के महिला विशेषांक का भी सम्पादन किया। इस अंक ने हिन्दी साहित्य जगत में अपनी विशेष पहचान बनाई।

प्रभा खेतान के रचनात्मक साहित्य में शिल्प योजना भी कथ्य के अनुरूप है। प्रभा खेतान की भाषा की अपनी अलग पहचान है। उनके चिन्तन को अभिव्यक्त करने में उनकी भाषा का बहुत अधिक योगदान है। उन्होंने भाषा–शैली के प्रति जागरूकता दिखाकर अपने अभिव्यक्ति–कौशल को प्रकट किया है। प्रभा खेतान द्वारा रचित साहित्य विविधतापूर्ण है इसलिए उनकी भाषा–शैली में भी विविधता दिखाई देती है इसलिए उनका साहित्य हिन्दी जगत में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। प्रभा खेतान ने अपने साहित्य में विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक, भावात्मक, नाट्यात्मक, पूर्वदीप्ति शैलियों का प्रयोग किया है। प्रभा खेतान ने अपने साहित्य में बिम्बों एवं प्रतीकों का प्रयोग करके भाषा में सूक्ष्मता का समावेश किया है।

समकालीन महिला लेखिकाओं में प्रभा खेतान का अपना अलग वैशिष्ट्य है। उनके साहित्य पर मार्क्सवाद और अस्तित्ववाद दोनों का प्रभाव है। प्रभा खेतान के संपूर्ण साहित्य में स्त्री सम्बन्धी चिंतन के दर्शन होते हैं। बीसवीं सदी के अंतिम दशक का साहित्य सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक दृष्टियों का साहित्य है। प्रभा खेतान के चिंतनपरक लेख और उनका रचनात्मक साहित्य उनके अनुभव की अभिव्यक्ति से पूर्ण है। प्रभा खेतान ने अपने चिंतनपरक लेखों में उदारीकरण के बाद बदलते आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य के स्त्री जीवन पर प्रभाव तथा पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में स्त्री–श्रमिक के समक्ष उपस्थित चुनौतियों तथा शोषण को रेखांकित किया है।

इस विवेचन के पश्चात् हम कह सकते हैं कि प्रभा खेतान के साहित्य पर उनके जीवन की परिस्थितियों व परिवेश का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पडता है। इन्होंने समाज में जो देखा–परखा, उसे अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त किया। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं का गहराई के साथ विवेचन किया है। इनका सम्पूर्ण साहित्य समाज में हाशिये पर खड़ी स्त्रियों की समस्याओं के यथार्थ से परिचित कराता है।

शोध विषय की प्रेरणा–

शोधकर्त्री को एम.ए करने के दौरान महादेवी वर्मा की 'शृंखला की कड़ियाँ' पढ़ने का अवसर मिला। इस पुस्तक का अध्ययन करने के दौरान महिलाओं की मानसिक संवेदना, व्यथा एवं संघर्ष ने शोधकर्त्री के अंतस को झकझोर दिया। शोध विषय के चयन के दौरान शोधकर्त्री को प्रभा खेतान द्वारा लिखित चिंतनपरक लेखों तथा उनके द्वारा रचित 'अन्या से अनन्या', 'स्त्री उपेक्षिता' और 'आओ पेपे घर चलें' पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। शोधकर्त्री इनके साहित्य को पढ़कर बहुत प्रभावित हुई तथा प्रभा खेतान के स्त्री विमर्श संबंधी चिंतन और रचनात्मक लेखन पर शोध करने के लिए प्रेरित हुई।

शोध विषय से संबंधित अन्य शोध कार्य–

विविध विश्वविद्यालयों में शोधकर्ताओं ने प्रभा खेतान के साहित्य पर शोध किए हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

1 प्रभा खेतान के उपन्यास में स्त्री–विमर्श :राकेश कुमार शर्मा (जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, 2014)

2 भूमंडलीकरण और प्रभा खेतान का उपन्यास :स्वाति वर्मा (विश्वभारती विश्वविद्यालय, कलकत्ता, 2015)

3 प्रभा खेतान एवं सरोज पाठक के उपन्यासों में नारी चेतना : एक तुलनात्मक अध्ययन (नकुम विपुल डी, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट, 2015)

4 प्रभा खेतान के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–मुथेसुल जयश्री अर्जुन (सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे, 2016)

उपर्युक्त शोध प्रबंधों में प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री विमर्श तथा भूमण्डलीकरण के संदर्भ में उनके उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, प्रभा खेतान तथा गुजराती लेखिका सरोज पाठक के उपन्यासों में नारी चेतना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

शोधकर्त्री के द्वारा चयनित विषय 'प्रभा खेतान के स्त्री विमर्श संबंधी चिंतन और रचनात्मक लेखन का आलोचनात्मक अध्ययन' के अंतर्गत उनके स्त्री विमर्श सम्बन्धी दृष्टिकोण एवं समग्र रचनात्मक साहित्य का सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाएगा। शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तावित शोध विषय मौलिक और नवीन है।

शोध विषय की आवश्यकता एवं महत्व–

प्रस्तुत शोध द्वारा प्रभा खेतान के स्त्री चिंतन संबंधी दृष्टिकोण तथा उनके समग्र रचनात्मक साहित्य का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। समकालीन महिला लेखिकाओं के परिप्रेक्ष्य में प्रभा खेतान के स्त्री विमर्श संबंधी चिंतन की मौलिकता की दृष्टि से इस शोध का विशिष्ट महत्व होगा। प्रभा खेतान के चिन्तन के उनके रचनात्मक साहित्य पर पड़ने वाले प्रभाव को सामने लाना शोध विषय की आवश्यकता होगी।

शोध विषय का उद्देश्य–

प्रस्तावित शोध विषय का मुख्य उद्देश्य प्रभा खेतान के स्त्री विमर्श संबंधी चिंतन और रचनात्मक लेखन का आलोचनात्मक अध्ययन करना है। उनके काव्य, कथा साहित्य, चिंतनपरक लेखों, अनुवाद तथा आत्मकथा में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श को सामने लाने का भी उद्देश्य है।

शोध कार्य की प्रविधि–

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा प्रभा खेतान के समग्र साहित्य का गहन अध्ययन एवं अनुशीलन किया जाएगा। प्रस्तावित शोध–प्रबंध के लिए वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक शोध प्रविधि अत्यंत समीचीन रहेगी, जिससे प्राप्त सामग्री का विश्लेषण कर उसकी समीक्षा की जा सके।

रूपरेखा

प्रभा खेतान के स्त्री विमर्श संबंधी चिंतन और रचनात्मक लेखन का आलोचनात्मक अध्ययन

प्रथम अध्याय–स्त्री विमर्श : अर्थ, स्वरूप एवं अवधारणा

1.1 स्त्री विमर्श : अवधारणा एवंस्वरूप

1.2 स्त्री विमर्श : पृष्ठभूमि एवं विकास

1.3 स्त्री विमर्श की वैचारिक परंपरा–

1.3.1 पाश्चात्य परंपरा

1.3.2 भारतीय परंपरा

1.4 स्त्री विमर्श और हिन्दी साहित्य

द्वितीय अध्याय– प्रभा खेतान : व्यक्तित्व, कृतित्व : स्रोत एवं स्वरूप

2.1 व्यक्तित्व

2.2 कृतित्व

2.3 चिन्तन के स्रोत एवं चिन्तनपरक साहित्य का स्वरूप

2.4 रचनात्मक लेखन के स्रोत एवं रचनात्मक लेखन का स्वरूप

2.5 चिन्तन एवं रचनात्मक लेखन की परस्परता

तृतीय अध्याय– प्रभा खेतान के समग्र साहित्य में स्त्री विमर्श

3.1 कविताओं में स्त्री विमर्श

3.2 उपन्यासों में स्त्री विमर्श

3.3 कहानियों में स्त्री विमर्श

3.4 चिन्तनपरक लेखों में स्त्री विमर्श

3.5 आत्मकथा में स्त्री विमर्श

3.6 अनूदित साहित्य में स्त्री विमर्श

3.7 सम्पादित साहित्य में स्त्री विमर्श

चतुर्थ अध्याय– प्रभा खेतान का शिल्पगत वैशिष्ट्य

4.1 भाषा–शैली

4.2 संवाद योजना

4.3 बिम्ब योजना

4.4 प्रतीक योजना

पंचम अध्याय– समकालीन स्त्री चिंतन और प्रभा खेतान का वैशिष्ट्य

5.1 समकालीन स्त्री चिंतन

5.2 समकालीन स्त्री चिंतन में प्रभा खेतान का वैशिष्ट्य

उपसंहार

परिशिष्ट–

1. आधार ग्रंथ
2. समीक्षात्मक ग्रंथ
3. समीक्षात्मक अंग्रेजी ग्रंथ
4. शब्दकोश–विश्वकोश
5. पत्र– पत्रिकाएँ

नोट–शोध निर्देशक के सुझाव से शोध कार्य में 20% परिवर्तन संभव है।

परिशिष्ट

आधार ग्रंथ

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	प्रकाशन	संस्करण
1	अपरिचित उजाले	प्रभा खेतान	अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली	1981
2	अल्बेयर कामू वह पहला आदमी	प्रभा खेतान	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2009
3	अहल्या	प्रभा खेतान	सरस्वती विहार, नई दिल्ली	1988
4	आओ पेपे घर चले	प्रभा खेतान	सरस्वती विहार, नई दिल्ली	1993
5	अग्निसंभवा	प्रभा खेतान	हंस पत्रिका, नई दिल्ली	1992
6	अपने अपने चेहरे	प्रभा खेतान	हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली	2010
7	अन्या से अनन्या	प्रभा खेतान	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2019
8	उपनिवेश में स्त्री : मुक्ति–कामना की दस वार्ताएँ	प्रभा खेतान	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2017
9	एड्स	प्रभा खेतान	पूजा पब्लिकेशन, कलकत्ता	1993
10	एक और आकाश की खोज	प्रभा खेतान	अप्रस्तुत प्रकाशन, कलकत्ता	1985
11	कृष्णधर्मा मैं	प्रभा खेतान	स्वर समवेत प्रकाशन, कलकत्ता	1986
12	छिन्नमस्ता	प्रभा खेतान	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2017
13	तालाबंदी	प्रभा खेतान	सरस्वती विहार, नई दिल्ली	1993
14	पितृसत्ता के नए रूप (सम्पादन)	प्रभा खेतान	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2003
15	पीली आंधी	प्रभा खेतान	लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज	2019
16	बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ : भूमंडलीकरण और स्त्री प्रश्न	प्रभा खेतान	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2007
17	भूमंडलीकरण, ब्रांडसंस्कृति और राष्ट्र	प्रभा खेतान	सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली	2007
18	हुस्नाबानो और अन्य कविताएँ	प्रभा खेतान	स्वर समवेत प्रकाशन, कलकत्ता	1987
19	स्त्री पक्ष	प्रभा खेतान	जनसत्ता पत्रिका, नई दिल्ली	1994
20	सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं	प्रभा खेतान	इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली	1982

21	स्त्री उपेक्षिता	प्रभा खेतान	हिन्दी पाकेट बुक्स, नई दिल्ली	1991
22	सांकलों में कैद क्षितिज	प्रभा खेतान	सरस्वती विहार, नई दिल्ली	1988
23	सार्त्र : शब्दों के मसीहा	प्रभा खेतान	हिन्दी पाकेट बुक्स, नई दिल्ली	2004
24	सार्त्र का अस्तित्ववाद	प्रभा खेतान	सरस्वती विहार, नई दिल्ली	1984

सहायक ग्रंथ

क्र.सं.	पुस्तक	लेखक	प्रकाशन	संस्करण
1	नारी चेतना और प्रभा खेतान के उपन्यास	डॉ0 देव्यानी महिड़ा	विकास प्रकाशन, कानपुर	2019
2	प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार	डॉ0 उषा कीर्ति राणावत	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2015
3	प्रभा खेतान की स्त्रीः कानून के कटघरे में	आकांक्षा भट्ट	सन्मति पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली	2016
4	प्रभा खेतान के उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन	प्रेम रंजन भारती	आयुष्मान पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली	2019
5	भारतीय नारी : अस्मिता की पहचान	डॉ0 उमा शुक्ल	लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज	2011
6	समकालीन परिदृश्य और प्रभा खेतान के उपन्यास	रेखा कुर्रे	हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली	2019
7	स्त्री विमर्श का लोकपक्ष	अनामिका	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2012
8	स्त्री–प्रश्न	नमिता सिंह	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2017